Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 14 ~ Issue 2 (February 2026) pp: 194-198
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

''अमूर्त कलाकार वी. एस. गायतोंडे की कला''

उमैरा परवीन
शोधार्थी
चित्रकला विभाग
एम0एच0पी0जी0 कॉलेज,
मुरादाबाद

प्रो0 नरेन्द्र सिंह
शोध निर्देशक
एम0एच0पी0जी0 कॉलेज
मुरादाबाद

सारांश

वी. एस. गायतोंडे आधुनिक भारतीय चित्रकला के प्रमुख अमूर्त कलाकारों में गिने जाते हैं। उन्होंने ऐसी चित्रभाषा विकसित की जिसमें किसी वस्तु या व्यक्ति का सीधा चित्रण करने के बजाय रंग, प्रकाश, रेखा, सतह और रिक्त स्थान के माध्यम से अनुभव व्यक्त किया जाता है। उनकी कला को 'नॉन–ऑब्जेक्टिव' (अर्थात वस्तु–निरपेक्ष कला) के रूप में समझा जाता है। उनके चित्रों में शांति, मौन, संतुलन और ध्यान जैसी अनुभूतियाँ दिखाई देती हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में गायतोंडे के जीवन, अमूर्त कला, चित्रकला की विशेषताओं, तकनीक तथा भारतीय आधुनिक कला में उनके योगदान का सरल भाषा में अध्ययन किया गया है। गायतोंडे का मानना था कला का उद्देश्य केवल सुंदरता दिखाना नहीं है बल्कि मनुष्य को अंदर से शांत करना है। इसीलिए उन्होंने वस्तुओं, लोगों या कहानियों को चित्रित करने के बजाय रंग और प्रकाश के खेल को अपनाया।

कुंजी शब्द :नॉन–ऑब्जेक्टिव, कैलिग्राफी, भारतीय आधुनिकता, चित्रभाषा, भारतीय चिंतन, आंतरिक अनुभव, दृष्टिकोण, कला संसाधन, कला परिदृश्य।

परिचय

बीसवीं शताब्दी में भारतीय चित्रकला में अनेक नये प्रयोग हुए। कलाकारों ने परंपरागत विषयों के साथ–साथ आधुनिक जीवन और अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियों को भी चित्रों में व्यक्त करना शुरू किया। इसी परिवर्तन के बीच वी. एस. गायतोंडे का नाम विशेष महत्व रखता है।

वे उन कलाकारों में थे जिन्होंने भारतीय आधुनिकता को अपनी अलग और शांत चित्रभाषा दी। उनके चित्रों में किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान को सीधे पहचानना कई बार कठिन होता है, लेकिन रंगों की परतें, हल्की रेखाएं और प्रकाश का अनुभव दर्शक को एक गहरी दृश्य अनुभूति देते हैं।

वी. एस. गायतोंडे का संबंध 1950 के दशक में 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप' और 'बॉम्बे ग्रुप' जैसे आधुनिक कला समूहों के वातावरण से रहा, लेकिन उनका कलात्मक विकास स्वतंत्र दिशा में हुआ। 1950 के दशक के उत्तरार्ध से उन्होंने अधिक स्पष्ट रूप से 'नॉन–ऑब्जेक्टिव' को अपनाया। 2014–15 में न्यूयॉर्क के सोलोमन आर. गुगेनहाइम म्यूज़ियम में उनके कार्यों पर एक महत्वपूर्ण प्रदर्शनी आयोजित हुई, जिससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनके काम का व्यापक अध्ययन और चर्चा हुई।

अमूर्त कला

अमूर्त कला वह कला है जिसमें कलाकार वास्तविक वस्तु या व्यक्ति को उसी रूप में दिखाने के बजाय रंग, रेखा, आकार, बनावट, प्रकाश और स्थान के माध्यम से विचार या अनुभूति व्यक्त करता है। इसमें पेड़ को पेड़, मनुष्य को मनुष्य या घर को घर की तरह बनाना आवश्यक नहीं होता है। कलाकार दृश्य संसार से प्रेरणा लेकर उसे अपने अनुभव के अनुसार बदल सकता है। इसलिए अमूर्त चित्र को समझने के लिए केवल यह पूछना पर्याप्त नहीं कि इसमें बना क्या है। यह भी देखना जरूरी है कि रंग और रूप किस प्रकार का अनुभव पैदा कर रहे हैं।

आधुनिक अमूर्त कला के विकास में पश्चिमी कला के साथ–साथ एशियाई और भारतीय चिंतन का भी अलग–अलग कलाकारों पर प्रभाव पड़ा। गायतोंडे के संदर्भ में ज़ेन बौद्ध विचार, भारतीय लघुचित्र परंपरा तथा पूर्वी एशियाई स्क्रॉल और स्याही चित्रों की दृश्य संवेदना का उल्लेख मिलता है। उनके चित्रों में खाली स्थान और मौन का महत्व इसी व्यापक संदर्भ में समझा जा सकता है।

वी. एस. गायतोंडे का जीवन परिचय

वासुदेव शांतु गायतोंडे का जन्म 1924 में नागपुर में हुआ। उन्होंने सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स, मुंबई में चित्रकला की शिक्षा प्राप्त की और 1948 में डिप्लोमा पूरा किया। स्वतंत्रता के बाद के भारतीय कला परिदृश्य में वे सक्रिय रहे और 1950 के दशक में आधुनिक कलाकारों के समूहों की प्रदर्शनियों में शामिल हुए। उनका कलात्मक स्वभाव स्वतंत्र था और वे अपनी कला को किसी एक आंदोलन की सीमा में बांधने के बजाय लगातार प्रयोग करते रहे।

1957 में उन्हें टोक्यो में आयोजित प्रथम 'यंग एशियन आर्टिस्ट एग्ज़ीबिशन' में प्रथम पुरस्कार मिला। भारत सरकार ने उन्हें 1971 में पद्मश्री से सम्मानित किया। उन्होंने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा चित्रकला के निरंतर अभ्यास और प्रयोग में लगाया। उनका निधन अगस्त 2001 में हुआ।

गायतोंडे की कला की प्रमुख विशेषताएं

नॉन–ऑब्जेक्टिव दृष्टि से गायतोंडे की बाद की कला में किसी निश्चित वस्तु का चित्रण नहीं मिलता। वे स्वयं 'नॉन–ऑब्जेक्टिव' शब्द को महत्व देते थे। उनके लिए चित्र किसी बाहरी वस्तु की नकल नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र दृश्य अनुभव था।

- उनके चित्रों में नीला, हरा, पीला, भूरा, धूसर और अन्य सूक्ष्म रंग–स्वर अक्सर एक–दूसरे में धीरे–धीरे मिलते दिखाई देते हैं। रंग तेज़ विरोध पैदा करने के बजाय वातावरण और गहराई का अनुभव देते हैं।
- गायतोंडे की चित्र सतह में प्रकाश भीतर से निकलता हुआ प्रतीत हो सकता है। यह प्रभाव रंगों की पतली परतों, सतह की तैयारी और नियंत्रित प्रयोग से बनता है।
- कुछ रचनाओं में छोटी–छोटी रेखाएं, संकेत या कैलिग्राफिक रूप दिखाई देते हैं। ये रेखाएं किसी वस्तु का पूरा रूप नहीं बनातीं, बल्कि चित्र की लय और संतुलन को बढ़ाती हैं।
- उनके चित्रों में खाली स्थान और सीमित दृश्य गतिविधियाँ दर्शक को शांत अनुभव देती हैं। इस कारण गायतोंडे की कला को ध्यान और आत्म–चिंतन से जोड़कर भी देखा गया है। ''जैन दर्शन और जीवन पद्धति ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। इस स्टूडियों की दीवारों का रंग कई सालों से उतारा नहीं कई सालों में यहाँ कि कोई भी चीज नहीं बदली है क्योंकि जो कुछ भी है वह मेरे जीवन के साथ उसी रूप में शोभा देता है। यह सब मेरे पेटिग के बहुत नजदीक आता है। छत के रंग की उखड़ी हुई पपड़िया मेरे चित्रों के फोर्म से अपना रिश्ता बताती हैं। पेंटिग करना समाधि जैसा होता है। गुरू वह होता है, जिसने स्वयं जीवन दर्शन पाया है। गुरू को इस बात का एहसास होता है कि वह स्वयं कौन है। ऐसा व्यक्ति ही आपको दृष्टि दे सकता है और ऐसी दृष्टि मिलने के बाद गुरू–शिष्य के बीच का द्वैत समाप्त हो जाता है। इसलिए, मैं पॉल क्ली को भी गुरू मानता हूँ।''

चित्र विषय

उनका रोलर, ब्रश अथवा नाईफ कैनवास पर बैले डान्सर की भाँति विचरण करते हुए दिखायी देते थे। सद्ऊदीन दाया की चित्र संग्रह प्रदर्शनी में उनके दो नीले तथा हरे रंग के तथा ख़ाकी काग़ज़ और समाचार–पत्र से बने कोलाज चित्र रखे गये थे। उनमें से नीले कैनवास का जादू कुछ और ही था। उसे देखकर मुझे पु.शि. रेगे की 'त्रिधा–राधा' कविता की 'आकाश नीले तो हरि' (नीला आकाश हरि है) पंक्ति का स्मरण हुआ। राधा का कृष्ण–प्रेम उसी के रंग में रंग जाने जैसा सहज था। नीले, लाल, हरे या पीले रंगों की छटाओं से बने इस कैनवास पर अन्य रंग इने–गिने रूप में ही उपस्थित थे, लेकिन वे भी राधा की भाँति मूलरंग के साथ एकरूपता को लिये। इन रंगों से विनिर्मित आकार अलग–अलग लगते हैं परन्तु उनके परस्पर सम्बन्ध अटूट नज़र आते हैं। किसी एक को अपनी जगह से हटाने पर सारी रचना ही निरर्थक हो जाती है। मर्ढेकर, पु.शि. रेगे या अरुण कोलटकर की कविता से उसकी तुलना की जा सकेगी। इनकी कविता का एकाध शब्द भी हटाया जाये या उसका क्रम बदल दिया जाये तो सम्पूर्ण कविता निष्प्राण हो जाने की सम्भावना होती है। इसी प्रदर्शनी में उनका एक हरा कैनवास भी था। उसके बारे में बोलते हुए नाडकर्णी ने कहा था –"मानो कोई जहाज़ सागर में डूब चुका है और धीरे–धीरे उस पर जंग चढ़ रहा है। कुछ–कुछ ऐसा ही बिम्ब उस कैनवास पर उभरता है। उसे देखते हुए मात्र शान्ति का अनुभव होता है, सायलेंट वैली या हिमालय से गुज़रते हुए होने वाली नीरवता के अहसास की तरह।

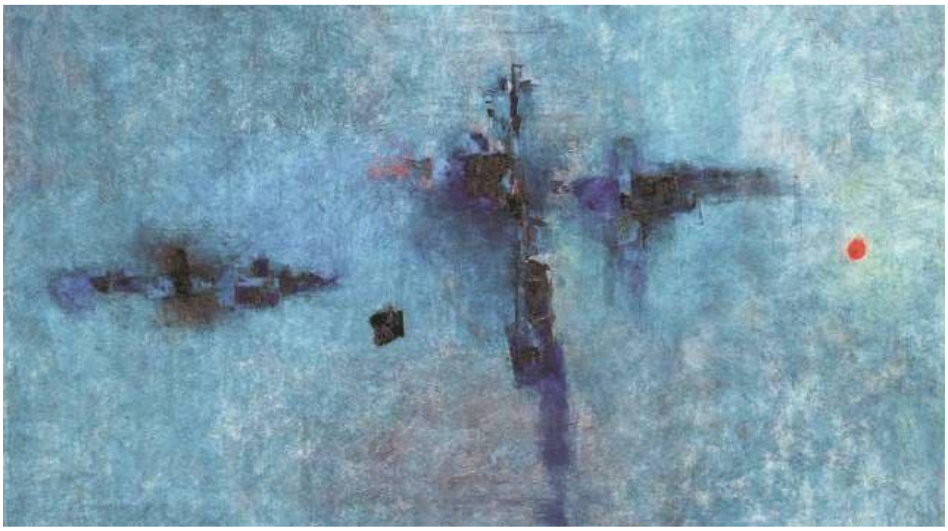

अनटाइटल्ड पेंटिंग जो कि 1961 में बनी है इस चित्र में गहरा नीला रंग भरा है, बीच में एक हल्का गोल प्रकाश है, जैसे रात के आकाश में बादलों के पीछे से चाँद झांक रहा हो। बहुत शांत और रहस्यमयी चित्र है।

अनटाइटल्ड पेंटिंग जो कि 1964 में बनी है इसमें भूरा रंग ऊपर से नीचे तक बहता हैं, जैसे कोई शांत नदी बह रही हो। इस चित्र को देखकर मन गंभीर हो जाता है।

अनटाइटल्ड पेंटिंग जो कि 1972 में बनी है, इस चित्र में पहली बार हल्का नारंगी और लाल रंग दिखाई देता है। जैसे अंधेरे में दीपक। बीच में एक उज्ज्वल बिन्दु है, जैसे अंधेरे में दीपक की लौ जल रही हो, ये आशा का प्रतीक है।

अनटाइटल्ड पेंटिंग जो कि 1979 यह उनके अन्तिम दिनों की पेंटिंग है। बहुत सरल है, केवल दो रंग और बहुत सारा खाली स्थान। इसमें जीवन की अन्तिम शांति और त्याग झलकता है।

गायतोंडे की तकनीक उनकी कला की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। वे कैनवास की सतह पर रंग की परतों को बहुत सावधानी से लगाते थे। कई चित्रों में रंगों की परतों, सतह को समतल तथा नियंत्रित रखने से एक शांत, चमकदार और

गहरी दृश्य सतह बनती है। कुछ कार्यों में रोलर के प्रयोग का उल्लेख मिलता है। उनकी प्रक्रिया तेज़ गति वाली एक बार में बना देने वाली प्रक्रिया नहीं थी। उसमें धैर्य, पुनरावृत्ति और सूक्ष्म परिवर्तन का महत्व था।

वे ब्रश की जगह मुख्य रूप से पेंट रोलर्स और पैलेट नाइफ का उपयोग करते थे।वे पहले अपारदर्शी रंग लगाते थे और सूखने के बाद पारदर्शी या पारभासी रंगों का प्रयोग करते थे,जिससे पेंटिंग में एक रहस्यमयी गहराई नज़र आती थी।

भारतीय आधुनिक कला में गायतोंडे का योगदान

गायतोंडे का सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने भारतीय आधुनिक चित्रकला में अमूर्तता को अपनी स्वतंत्र दृश्य भाषा के रूप में विकसित किया। उन्होंने न तो केवल पश्चिमी अमूर्त कला की नकल की और न ही परंपरा को पूरी तरह छोड़ दिया। उनकी कला में भारतीय संवेदना, रंग की सूक्ष्मता और आधुनिक चित्र भाषा एक साथ दिखाई देती है।

इस कारण उनका काम भारतीय आधुनिकता का विशिष्ट उदाहरण बनता है। उनकी कला ने यह भी दिखाया कि चित्रकला में कम साधनों से गहरा प्रभाव पैदा किया जा सकता है। बहुत कम दृश्य संकेतों के माध्यम से दर्शक को रंग, प्रकाश और मौन का अनुभव कराना उनकी विशेष उपलब्धि है। आज संग्रहालयों, कला संस्थानों और कला अध्ययनों में उनके कार्यों की उपस्थिति इस बात को दर्शाती है कि गायतोंडे का योगदान भारतीय आधुनिक कला के इतिहास में स्थायी महत्व रखता है। गायतोंडे में किसी प्रकार की प्रतिबद्धता नहीं थी, वे पूर्ण स्वतंत्र कलाकार थे। वे किसी भी विचारधारा के पक्षधर या प्रचारक नहीं थे। वे व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर ही चित्र रचना करते थे। अतः अपने चित्रों के शीर्षक नहीं रखते थे। चित्र में आकृत, रंगों के धब्बों के अमूर्त संयोजन के द्वारा ही दर्शकों को वे किसी विशेष मनःस्थिति की अनुभूति कराना चाहते थे। अपने ही चित्रों में स्वयं अपने ही द्वारा पूर्व में प्रयुक्त पद्धति की पुनरावृत्ति नहीं करना चाहते थे। अतः उनके संयोजनों में नवीनता बनी रहती थी।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वी. एस. गायतोंडे केवल अमूर्त चित्र बनाने वाले कलाकार नहीं थे बल्कि उन्होंने चित्रकला की एक ऐसी भाषा विकसित की जिसमें रंग, प्रकाश, सतह, रिक्तता और मौन एक साथ काम करते हैं। उनकी कला में बाहरी संसार का सीधा चित्रण कम और आंतरिक अनुभव की संभावना अधिक दिखाई देती है।

उनका 'नॉन–ऑब्जेक्टिव' दृष्टिकोण भारतीय आधुनिक चित्रकला को एक नई दिशा देता है। गायतोंडे की कला आज भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वह दर्शक को चित्र का अर्थ तुरंत बताने के बजाय उसे देखने, रुकने और अनुभव करने के लिए प्रेरित करती है। यही इनकी चित्रकला भारतीय आधुनिक कला के इतिहास में एक शांत लेकिन अत्यंत प्रभावशाली अध्याय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रताप, डॉ. रीता : 'भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास', राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
2. चतुर्वेदी, ममता : 'भारतीय आधुनिक साहित्य/कला' से संबंधित अध्ययन।
3. आर. ए. अग्रवाल : 'भारतीय चित्रकला एवं आधुनिक कला' पर संबंधित अध्ययन।
4. संबंधित संग्रहालय, कला संस्थान एवं प्रदर्शनी स्रोत।
5. कला – भारती : खण्ड– एक